



शालतोड़ा नेताजी सेन्टेनारी कलेज
सञ्चिता साँतरा
सहकारी अध्यापिका
संस्कृतः विभागः



साहित्यदर्पणम् (षष्ठः परिच्छेदः)

आलोच्यविषय
प्रस्तावना

प्रस्तावना

प्रस्तावयति प्रकृतिविषयमुपस्थापयतीति इति प्रस्तावना

अर्थात्

नाटकेर ये अंशे नाटकिय विषयवस्तु सूचना करा ह्य तारई नाटके पारिभाषिक नाम प्रस्तावना।

नाटके नान्दी पाठान्तरम् परम् प्रस्तावना उपस्थापितं भवति।

नाटकेर क्रमानुसारेर नान्दी पाठेर परे प्रस्तावना उपस्थापित ह्य।

प्रस्तावनार आरओ दूटि नाम आछे स्थापना ओ आमूख।

प्रस्तावनायाः लक्षणम्

साहित्यदर्पणकारेण साहित्यदर्पणे उक्तम् ----

नटी विदूषको वापि पारिवारिक एव वा।

सूत्रधारेण सहिता संलापं यत्र कुर्वते।।

चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः।

आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनापि सा ।।

अर्थात् नाटकेर यखन नटि विदूषक वा पारिवारिक निजेओ कर्तव्य विषये सूत्रधारेर सङ्गे प्रकृत विषये ङापन सूचक कथोपकथन करेन तखन ताके आमुख बला हय । तारई अपर नाम प्रस्तावना।।

प्रस्तावनायाः भेदाः

१. उद्घात्यकः
२. कथोद्घातकः
३. प्रयोगातिशयः
४. प्रवर्तकः
५. अवलगितः

उद्घात्यकस्य लक्षणम्

पदानि त्वगतार्थानि तदर्थगतये नराः।
योजयन्ति पदैरन्येः सः उद्घात्यक उच्यते॥

अर्थां मानुषेर अर्थबोधेर जन्य निज निज अभिप्राय मत अर्थबोधक पद योजना करे यखन मक्खे पात्र प्रवेश घटे तखन ताके उदघात्यक श्रेणीर प्रस्तावना बले।

मुद्राराम्कस नाटके एइ श्रेणीर प्रस्तावनार प्रयोग देखा याय।

कथोद्घातकस् लक्षणम्

सूत्रधारस्य वाक्यं समादायार्थमस्य वा ।
भवेत् पात्रप्रवेशश्चेत् कथोद्घातः सः उच्यते ॥

अर्थात् यत्न सूत्रधारेर वाक्यके अविकल भावे बलते बलते अथवा सूत्रधारेर वाक्येर
अर्थानुसारे वाक्य प्रयोग करे मन्त्रे पात्र प्रवेश करानो ह्य तत्न ता कथोद्घातक श्रेणीर
प्रस्तावना बला ह्य।

उदाहरण - रत्नावली नाटके एइ धरनेर प्रस्तावनार प्रयोग देखा याय।

प्रयोगातिशयस्य लक्षणम्

यदि प्रयोगो एकस्मिन् प्रयोगोऽन्य प्रयुज्यते।
तेन पात्रप्रवेशश्चेत् प्रयोगातिशयस्तदा।।

अर्थात् एकटि प्रयोग वा प्रसङ्ग चलते चलते अन्य एकटि प्रसङ्ग सहसा उपस्थित हले सूत्रधार यदि प्रथमटिके अतिशय अर्थात् उपेक्षा करे करेन एवं द्वितीयटि अबलम्बन करे मन्त्रे पात्रप्रवेश सूचित करेन तवे प्रयोगातिशय श्रेणीर प्रस्तावना हय।

उदाहरण:- 'कुन्दमाला' नाटके एइ धरनेर प्रस्तावनार प्रयोग हयेछे।

प्रवर्तकस्य लक्षणम्

कालं प्रवृत्तमाश्रित्य सूत्रधृग् यत्र वर्णयेत्।
तदाश्रयश्च पात्रस्य प्रवेशस्तत् प्रवर्तकम्।।

अर्थात् सूत्र धार कर्तृक कोन ऋतुर वर्णनार माध्यमे मञ्चे पात्र प्रवेश सूचित
हले प्रवर्तक श्रेणी प्रस्तावना हय।

उदाहरण :- 'उत्तररामचरित' नाटके एइ धरनेर प्रस्तावनार प्रयोग हयेछे।

एखाने शरत् ऋतुर वर्णनाय श्लेषेर साहाये श्रीरामचन्द्रेर वर्णनार माध्यमे नाटकिय पात्र
रामचन्द्रेर प्रवेश सूचित हयेछे ।

अवलगितस्य लक्षणम्

यत्रैकत्र समावेशात् कार्यमन्यत् प्रसाध्यते।
प्रयोगे खलु तजज्ञेयं नाम्नावलगितं बुधैः॥

अर्थां ये प्रस्तावनाय कोन एकटि विषयेर प्रशंसार छले सादृश्य हेतु अन्य विषयेर प्रशंसाय उपमान रूपे वर्णित पात्रेर प्रवेश सूचित हय ताके अवलोगित श्रेणीर प्रस्तावना बला हय।

उदाहरणः- अभिज्ञान शकुन्तलम नाटके एइ धरनेर प्रस्तावनार प्रयोग देखा याय। येखाने नटिर गीत रागेर माधुर्ये सूत्रधारेर आकृष्ट हवार साथे सारङ्ग कर्तृक राजा दुष्यन्तेर आकृष्ट हवार सादृश्य वर्णनार माध्यमे पात्र दुष्यन्तेर मण्ठे प्रवेश सूचित हयेछे।

